CBSE Test Paper 04

Ch-7 सूरदास

1. **निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**

   ऊधौ, तुम हो अति बड़भागी।
   अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
   पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
   ज्य जल माहूँ तेल की गागरिं, बूंद न ताका लागी।
   प्रीति-नदी में पाउँ न बोर्दी, दृष्टि न रूप परागी।
   'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पाग।

   i. 'गुर घाँटी ज्यौं पागी' में किस भाव की अभिव्यक्ति हुई है?
   ii. उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है?
   iii. 'अति बड़भागी' में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

2. गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन-से परिवर्तन दिखाई दिए, जिनके कारण वे अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं ?

3. उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किससे की गई है?

4. गोपियों के अनुसार प्रेम रूपी नदी में किसने पैर नहीं रखा है? और उन्हें उसकी दृष्टि में क्या अभाव दिखाई दे रहा है?

5. 'सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यों करुई ककरी' पंक्ति में गोपियों के कैसे मनोभाव दर्शाए गए हैं?

6. दूसरों को नीति की सीख देने वाले कृष्ण स्वयं अनीति का आचरण करने लगे। गोपियों ने ऐसा क्यों कहा है?

CBSE Test Paper 04

Ch-7 सूरदास

Answer

1. i. दीवानगी का भाव। गोपियाँ कृष्ण पर पूरी तरह समर्पित हैं। यह कथन कृष्ण के प्रति उनके गहरे अनुराग को व्यक्त करता है।
   ii. कमल के पत्ते व तेल की गागर से तुलना की गई है। दोनों ही जल की सन्निकटता पर भी उससे प्रभाव से मुक्त रहते हैं।
   iii. वे व्यंग्य स्वरूप कह रही हैं क्योंकि वे कृष्ण के समीप रहकर भी उनके प्रेम बंधन में नहीं बँध सके और न ही विरह की दुखदाई स्थिति से गुज़रकर उनके प्रेम में व्याकुल हुए।

2. मथुरा जाने से कृष्ण की सोच में बहुत परिवर्तन आ गया है | वे हमें प्रेम का मार्ग छोड़ योग के मार्ग का संदेश दे रहे हैं। मथुरा जाकर वे कुशल राजनीतिज्ञ बन गये और हम पर राजनीति कर रहे हैं। आप तो आते नहीं और हमें योग सीखने को कह रहे हैं। नीति की अपेक्षा,अनीति का सहारा लेकर हम से दूर हो रहे हैं। इसलिए गोपियाँ अपना मन वापस मांग रही है।

3. उद्धव के व्यवहार की तुलना पानी के ऊपर तैरते हुए कमल के पत्ते से और पानी में डूबी हुई तेल की गागर से की गयी है। जो पानी के अंदर रहते हुए भी पानी की एक बूंद जल भी नहीं लगता है।

4. गोपियों के अनुसार निर्गुण भक्ति प्रेम का संदेश देने वाले उद्धव ने प्रेम रूपी नदी में पैर नहीं डुबोया। उद्धव कृष्ण के अति निकट रहते हुए भी उनके प्रेम व सौन्दर्य अधूरे रह गए। उद्धव प्रेम के महत्व से अनजान हैं क्योंकि आप कभी किसी की सौंदर्य से मुग्ध नहीं हुए।

5. गोपियाँ योग के प्रति उपेक्षित रवैया अपनाती हैं। वह कहती हैं कि हमने तो योग साधना के बारे में न तो कभी सुना है न ही कभी देखा है। इसके बारे में सुनना ऐसा प्रतीत होता है जैसे कड़वी ककड़ी जिस प्रकार कड़वी ककड़ी को खाया नहीं जा सकता उसी प्रकार से कृष्ण प्रेम को बुलाकर हम योग साधना कैसे कर सकते है।

6. गोपियों ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि श्रीकृष्ण स्वयं आदर्श और प्रेम की मूरत हैं वे संसार की प्रत्येक प्राणी के मन के बारे में जानते हुए भी उध्दव के हाथ प्रेम के बदले योग का संदेश भेजते हैं जो नीति नहीं अनीति है।